जय भिक्षु निलयम का भव्य उद्घाटन समारोह

लाडनूं, 24 जून।

प्रातः 8.00 बजे युवाचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में जैन विश्व भारती परिसर में जय भिक्षु निलयम का भव्य उद्घाटन समारोह का आयोजन किया गया।

भिक्षु निलयम कम्युनिटी सेंटर में बने चार भवनों में कोलकाता भवन का उद्घाटन श्रीमती लक्ष्मी - चैनरूप चिण्डालिया, तमिलनाडू भवन का श्रीमती चन्द्रा - मेघराज लूणावत द्वारा, मुंबई भवन का श्रीमती कमला - रमेश कुमार धाकड़ द्वारा व गुजरात भवन का श्रीमती सुनीता - बाबूलाल सुराणा द्वारा जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र चौरिड़या के नेतृत्व में शंखनाद के साथ किया गया। उद्घाटन के पश्चात युवाचार्यश्री महाश्रमण ने चारों भवनों का अवलोक किया।

उद्घाटन के पश्चात आचार्यश्री महाप्रज्ञ के सान्निध्य में जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में जय भिक्षु निलयम में बने 96 आवासी फ्लेटों का आवंटनपत्र हस्तातन्तरण एवं सम्मान श्री सुरेन्द्र चौरड़िया एवं श्री रणजीत सिंह कोठारी ने प्रतिकचिन्ह को भेंट कर किया।

निर्माण कार्य में सहयोग देने वाले बसंत पारख, आर्किटेक्ट कमल पेरीवाल, निर्माण कार्य करने वो विद्या सिंह को भी श्री सुरेन्द्र चोरड़िया प्रतिक चिन्ह भेंट कर स्वागत किया।

कार्यक्रम का संचालन प्रोफेसर बच्छराज दूगड़ ने किया।

जैन विश्व भारती शिक्षा, साधना और सेवा की संस्था है
- आचार्यश्री महाप्रज्ञ

लाडनूं, 24 जून।

जैन विश्व भारती के सुधर्मा सभा में आयोजित जय भिक्षु निलयम के उद्घाटन एवं सम्मान समारोह को संबोधित करते हुए आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि आज बाह्य भवन निर्माण आदि में बहुत परिवर्तन हुआ है,बाहर का परिवेश अच्छा नहीं होता तो अच्छा नहीं लगता। बाहर का परिवेश को सुन्दर रूप देने का प्रयास किया जा रहा है, यह अच्छा है क्योंकि व्यक्ति को बाहर का वातावरण भी आकर्षित करता है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी के संस्मरणों को प्रस्तुत करते हुए कहा कि गुरुदेव आचार्य तुलसी कहते थे कि जैन विश्व भारती में शुद्ध हवा, शुद्ध दवा और दुवा ये तीनों मिलते हैं। जैन विश्व भारती में रसायनशाला में शुद्ध दवा मिलती है, यहां के उद्यानों से शुद्ध हवा मिलती है और दुवा तो मिलती ही है। उन्होंने कहा कि एक दृष्टिकोण बनना चाहिए कि जैन विश्व भारती किसी एक व्यक्ति की संस्था नहीं है किसी संगठन की संस्था भी नहीं है। यह केवल विद्या, साधना, सेवा की संस्था है। इससे पीछे कोई संगठन नहीं है। केवल वर्तमान आचार्य के द्वारा साधु-साध्वियों

और समणियों के द्वारा इसकी आंतरिक गतिविधियों का संचालन होता है। बाहर में जो लोग आते हैं वे लोग संचालन करते हैं।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मैं देख रहा हूं कि वर्तमान में जो टीम आई है वह इसके प्रति बहुत जागरूक है। पूरी निष्ठा के साथ लगी हुई है और अनेक लोगों को जोड़ा है और इसके साथ सबको जुड़ना चाहिए। आचार्य तुलसी के शब्दों में जैन विश्व भारती समाज की कामधेनु है। कामधेनु समाज की इसलिए है कि यहां सात सकार की प्रक्रिया चलती थी। जिसमें विद्याओं का काम हो रहा है बच्चों के लिए जैन तत्व विद्या का समण संस्औति संकाय के द्वारा लाखों विद्यार्थी यहां से उत्तीर्ण हुए हैं और हो रहे हैं।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि जैन विश्व भारती का व्यापक संपर्क देश-विदेश में हुआ है और अमृतवाणी जैन विश्व भारती का ही एक अंग है, अमृतवाणी के द्वारा जो व्यापक प्रसार हुआ है कि सचमुच कामधेनु जैसा ही काम हो रहा है। अभी जो साहित्य का काम जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय हो रहा है।

जैन विश्व भारती और जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय दो नहीं है। मूल संस्थापक तो जैन विश्व भारती है और इसी के द्वारा ही विश्वविद्यालय स्थापित हुआ है। आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने कहा कि मैं चाहता हूं पूरा समाज इस पर ध्यान दें इसका विकास जितना होगा जैन शासन का, तेरापंथ का और मानव जाति का तीनों का बहुत विकास होगा। क्योंकि यहां का व्यापक क्षेत्र में मानव जाति का काम चल रहा है। सब ध्यान दें इसका हमें विकास करना है ऐसा बनाना है कि जिससे एक प्रतिष्ठित बन सके। मुझे प्रसन्नता है कि बाहर के परिवेश को एक नया रूप मिला है और आने वाले समय में जैन विश्व भारती का एक नया रूप सामने आ रहा है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जैन विश्व भारती के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि यहां के विश्वविद्यालय के द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम हो रहा है इसी तरह ये पवित्र काम आगे बढते रहें तो बहुत विकास हो सता है।